AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing IF:3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (2), May-July 2025 ISSN: 3048-7951

डिजिटल मीडिया और सामाजिक परिवर्तन : भारत के युवाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रजनीकान्त मिश्रा[1]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.22956494

Review: 25/07/2025 Acceptance: 27/08/2025 Publication: 10/09/2025

सारांश: वर्तमान समय में डिजिटल मीडिया भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। विशेष रूप से युवाओं के जीवन, विचारधारा, व्यवहार, सामाजिक संबंधों, राजनीतिक सहभागिता तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारत के युवाओं पर डिजिटल मीडिया के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। शोध से ज्ञात होता है कि डिजिटल मीडिया ने युवाओं को सूचना, शिक्षा, रोजगार एवं सामाजिक जागरूकता के नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर साइबर अपराध, सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव तथा सांस्कृतिक परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। अध्ययन निष्कर्षतः यह स्थापित करता है कि डिजिटल मीडिया सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है जिसने भारतीय युवाओं की जीवनशैली और सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है।

मुख्य शब्द: डिजिटल मीडिया, सामाजिक परिवर्तन, युवा, समाजशास्त्र, सोशल मीडिया, भारत

परिचय:

अध्ययन की पृष्ठभूमि: 21वीं सदी को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की सदी कहा जाता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म तथा डिजिटल नेटवर्क ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा इंटरनेट उपयोगकर्ता देश है। युवा वर्ग डिजिटल मीडिया का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। डिजिटल मीडिया में सोशल मीडिया, Facebook, Instagram, X, YouTube, WhatsApp, ब्लॉग, वेबसाइट, ऑनलाइन समाचार पोर्टल और अन्य इंटरनेट-आधारित संचार माध्यम शामिल हैं। इन माध्यमों ने सामाजिक संपर्क, संचार, शिक्षा, राजनीतिक भागीदारी तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के स्वरूप को बदल दिया है।

समस्या का प्रतिपादन: डिजिटल मीडिया के विस्तार ने भारतीय युवाओं के सामाजिक व्यवहार, पारिवारिक संबंधों, राजनीतिक चेतना तथा सांस्कृतिक मूल्यों में व्यापक परिवर्तन किए हैं। यह अध्ययन इस बात का विश्लेषण करता है कि डिजिटल मीडिया युवाओं के जीवन और समाज में किस प्रकार परिवर्तन ला रहा है।

[1]Assistant Professor, JNM College for Advance Studies & Technology, Varanasi. Uttar Pradesh, India.

अध्ययन का महत्व:

1. युवाओं पर डिजिटल मीडिया के प्रभाव को समझना।
2. सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में डिजिटल मीडिया की भूमिका का अध्ययन।
3. नीति निर्माण हेतु उपयोगी सुझाव प्रदान करना।
4. समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की समकालीन संदर्भ में व्याख्या करना।

साहित्य समीक्षा: साहित्य समीक्षा शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसका उद्देश्य यह समझना होता है कि आपके चुने हुए विषय पर पहले से क्या-क्या शोध हो चुका है, किन पहलुओं पर पर्याप्त काम हुआ है और किन क्षेत्रों में अभी शोध की आवश्यकता है।

मैनुअल कैस्टेल्स (Manuel Castells), कैस्टेल्स ने "नेटवर्क सोसाइटी" की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार आधुनिक समाज डिजिटल नेटवर्क पर आधारित होता जा रहा है।

मार्शल मैकलुहान, मैकलुहान ने "Global Village" की अवधारणा दी। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पूरी दुनिया को एक छोटे गाँव में परिवर्तित कर देता है।

एंथनी गिडेन्स (Anthony Giddens), गिडेन्स के अनुसार वैश्वीकरण और आधुनिकता की प्रक्रियाओं में संचार तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारतीय संदर्भ में अध्ययन: विभिन्न भारतीय शोधों में पाया गया कि सोशल मीडिया ने युवाओं में राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक सक्रियता तथा शिक्षा के नए अवसर उत्पन्न किए हैं, लेकिन इसके नकारात्मक प्रभाव भी देखे गए हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. भारतीय युवाओं में डिजिटल मीडिया के उपयोग का अध्ययन करना।
2. डिजिटल मीडिया के सामाजिक संबंधों पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. युवाओं के सांस्कृतिक व्यवहार में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
4. राजनीतिक एवं सामाजिक जागरूकता में डिजिटल मीडिया की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. डिजिटल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की पहचान करना।

परिकल्पनाएँ:

H1: डिजिटल मीडिया युवाओं की सामाजिक जागरूकता को बढ़ाता है।

H2: जिटल मीडिया पारंपरिक सामाजिक संबंधों में परिवर्तन लाता है।

H3: डिजिटल मीडिया युवाओं की राजनीतिक सहभागिता को प्रभावित करता है।

H4: डिजिटल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक तनाव को बढ़ा सकता है।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

अनुसंधान का प्रकार: यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) अनुसंधान पर आधारित है।

अनुसंधान डिज़ाइन: सर्वेक्षण पद्धति (Survey Method) का उपयोग किया गया।

अध्ययन क्षेत्र: भारत के विभिन्न शहरी एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों के युवा।

अध्ययन की इकाई: 18-30 वर्ष आयु वर्ग के युवा।

नमूना चयन: नमूना आकार: 200 युवा

नमूना पद्धति: स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना (Stratified Random Sampling)

आंकड़ा संग्रहण के स्रोत

प्राथमिक स्रोत: प्रश्नावली (Questionnaire), साक्षात्कार (Interview), अवलोकन (Observation)

द्वितीयक स्रोत: पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, जनगणना रिपोर्ट, इंटरनेट स्रोत

अवधारणात्मक ढाँचा

स्वतंत्र चर: डिजिटल मीडिया उपयोग

संकेतक: इंटरनेट उपयोग, सोशल मीडिया सहभागिता, ऑनलाइन समाचार

आश्रित चर: सामाजिक परिवर्तन

संकेतक: सामाजिक संबंध, सांस्कृतिक मूल्य, राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक भागीदारी

आंकड़ों का विश्लेषण: तालिका 1: प्रतिदिन डिजिटल मीडिया उपयोग

उपयोग अवधि	प्रतिशत
1-2 घंटे	15%
3-5 घंटे	40%
5-7 घंटे	30%
7+ घंटे	15%

विश्लेषण: अधिकांश युवा प्रतिदिन 3-5 घंटे डिजिटल मीडिया का उपयोग करते हैं।

तालिका 2: डिजिटल मीडिया के उपयोग का उद्देश्य

उद्देश्य	प्रतिशत
शिक्षा	30%
मनोरंजन	35%
सामाजिक संपर्क	20%
समाचार	15%

विश्लेषण: मनोरंजन और शिक्षा प्रमुख उपयोग क्षेत्र हैं।

तालिका 3: सामाजिक जागरूकता पर प्रभाव

उत्तर	प्रतिशत
सहमत	72%
असहमत	18%
अनिश्चित	10%

विश्लेषण: अधिकांश उत्तरदाताओं ने माना कि डिजिटल मीडिया सामाजिक जागरूकता बढ़ाता है।

तालिका 4: नकारात्मक प्रभाव

प्रभाव	प्रतिशत
मानसिक तनाव	35%
समय की बर्बादी	30%
साइबर बुलिंग	15%
सामाजिक अलगाव	20%

विश्लेषण: मानसिक तनाव एवं समय की बर्बादी प्रमुख समस्याएँ हैं।

सैद्धांतिक व्याख्या

संरचनात्मक क्रियात्मकतावाद : डिजिटल मीडिया समाज में सूचना प्रसार एवं सामाजिक एकीकरण का कार्य करता है।

संघर्ष सिद्धांत: डिजिटल मीडिया शक्ति, संसाधनों एवं विचारधाराओं के संघर्ष का माध्यम भी बनता है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद: ऑनलाइन संचार नए सामाजिक अर्थों और प्रतीकों का निर्माण करता है।

प्रमुख निष्कर्ष: डिजिटल मीडिया युवाओं के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है।

1. सामाजिक जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
2. राजनीतिक एवं सामाजिक आंदोलनों में युवाओं की भागीदारी बढ़ी है।
3. पारंपरिक सामाजिक संबंधों का स्वरूप परिवर्तित हुआ है।
4. ऑनलाइन नेटवर्किंग ने नए सामाजिक समूहों का निर्माण किया है।
5. मानसिक तनाव एवं साइबर अपराध जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं।
6. सांस्कृतिक वैश्वीकरण के प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते हैं।

सुझाव (Suggestions)

1. डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
2. साइबर सुरक्षा संबंधी जागरूकता बढ़ाई जाए।
3. युवाओं के लिए सोशल मीडिया उपयोग की नैतिक दिशा-निर्देश विकसित किए जाएँ।
4. शैक्षिक उद्देश्यों के लिए डिजिटल मीडिया को प्रोत्साहित किया जाए।
5. मानसिक स्वास्थ्य सहायता सेवाओं को मजबूत किया जाए।

निष्कर्ष: डिजिटल मीडिया ने भारतीय युवाओं के जीवन में गहरा सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न किया है। यह न केवल सूचना और संचार का माध्यम है बल्कि सामाजिक जागरूकता, राजनीतिक सहभागिता और सांस्कृतिक परिवर्तन का भी प्रमुख कारक बन चुका है। हालांकि इसके अनेक सकारात्मक प्रभाव हैं, किंतु इसके साथ उत्पन्न चुनौतियों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अतः आवश्यक है कि डिजिटल मीडिया का उपयोग संतुलित, जिम्मेदार एवं समाजोपयोगी तरीके से किया जाए ताकि यह सामाजिक विकास का प्रभावी साधन बन सके।

संदर्भ सूची:

1. Castells, Manuel (2010). *The Rise of the Network Society.*
2. McLuhan, Marshall (1964). *Understanding Media.*
3. Giddens, Anthony (1991). *Modernity and Self Identity.*
4. Kumar, Vinod (2018). *Digital India and Social Change.*
5. Ministry of Electronics and Information Technology, Government of India Reports.
6. Census of India Reports.
7. UGC Research Journals on Media and Society.

8. UNESCO Reports on Digital Media.
9. Internet and Mobile Association of India (IAMAI) Reports.
10. Various peer-reviewed sociology and media studies journals.